आचारज के शिष्य अपारा। सकल सिद्ध विद्वान उदारा
तिन महँ एक अतिहि गुरुप्रेमी। चेतनदास नाम दृढ़ नेमी

आचार्य के सहस्रों शिष्य थे। सभी विद्वान् सभी सिद्ध और सभी परोपकारी थे। उनमें एक शिष्य चेतनदास नाम के महात्मा थे। वह बड़े गुरु-भक्त तथा योगी थे।

रहइ निरन्तर गुरुवर संगा। गुरु सेवा महँ अधिक उमंगा
विप्र वंश सुन्दर तन पायो। पढ़ि विद्या विराग उर छायो

वह सदा आचार्य की सेवा में रहकर बड़ी उमङ्ग से सब कार्य करते थे। वे ब्राह्मण थे और बड़े सुन्दर थे, फिर विद्या-अध्ययन करके वैराग्य हो गया तब आचार्य की शरण में आ गये।

अति चैतन्य चतुरता भारी। व्यास सुवन समकथा प्रचारी
बोले परम मनोहर वाणी। भक्ति निधान परम विज्ञानी

वह बड़े चतुर और चैतन्य थे। इसी से उनका नाम गुरुदेव ने चैतन्यदास रक्खा था। वह कथा भी बहुत सुन्दर शुकदेवजी की तरह कहकर भक्ति का प्रचार करते थे। वे बड़ी मधुर वाणी बोलते तथा बड़े भक्तिमान् और ज्ञानवान थे।

गुरुआयसु अतिरुचि अनुसरई। तजि समाधिसुख सेवा करई
बिनविकार तनु तासु विराजै। निर्मलरविमंडल जिमिभ्राजै

गुरुदेव की आज्ञा-पालन में उनको बड़ा उत्साह रहता था, यहाँ तक कि समाधि का सुख छोड़ सेवा में लगे रहते थे। उनका शरीर सब विकारों से रहित निर्मल सूर्य के समान चमकता था।

दो०—आचारज कहँ परम प्रिय, लागै चेतनदास।
कबहुँ कबहुँ सिद्धान्त बहु, तामिष करहिं प्रकाश॥

वह चेतनदासजी आचार्य को बहुत प्रिय थे। कभी-कभी उनको सुनाने के बहाने से सब शिष्यों को गूढ़ रहस्य समझाया करते थे।

एक दिवस श्रीचेतनदासा। कीन्ह प्रश्न प्रभु सों सहुलासा
जग महँ ग्रंथ हजारन अहहीं। राम नाम महिमा सब कहहीं

एक दिन श्रीचेतनदासजी ने बड़े प्रेम से गुरुदेव से प्रश्न किया कि—इस जगत् में हजारों ग्रंथ हैं, परन्तु प्रायः राम-नाम की महिमा तो सभी ग्रंथ गाते रहते हैं।

जेते जग लौकिक व्यवहारा। सब महँ राम नाम आधारा
शुभकाजन उच्चारहिं रामहिं। मरतसमय रामहिंकर नामहिं

जगत् में जितने लौकिक व्यवहार हैं सबमें भगवान् का नाम ही आधार है। शुभ कार्यों के आरम्भ में प्रभु का नाम ही उच्चारण किया जाता है और अन्त समय में भी राम-नाम ही सत्य कहते हैं।

और और मतभेद बतावत। राम नाम महिमा सब गावत
मरत समय जो राम उचारै। मुक्त होय साकेत सिधारै

अन्य-अन्य सिद्धान्तों में तो चाहे मतभेद हो, परन्तु राम-नाम की महिमा में किसी का मतभेद नहीं। मरते समय जो राम-नाम उच्चारण कर ले तो साकेत धाम प्राप्त हो जाता है। वह मुक्त हो जाता है।

सो अस रामनाम अचरजमय। कौनवस्तु है कहिय दयामय
शंकर जपत कुटुम्ब समेता। कहा वस्तु यह कृपानिकेता

हे प्रभो! सो ऐसा आश्चर्यमय वह राम-नाम है क्या वस्तु? श्रीशिवजी भी अपने परिवार सहित राम-नाम जपते हैं–सो यह है क्या?

दो०—सुनि बोले श्री जगद्गुरु, रामनाम कर रूप।
दिव्य दृष्टि जे पावहीं, लखहिं यथार्थ स्वरूप॥

तब श्रीआचार्य भगवान् ने कहा—जिनको दिव्यदृष्टि प्राप्त होती है वही श्रीराम-नाम का ठीक-ठीक स्वरूप देख पाते हैं।

रामनाम सब कछु अहै, कौन वस्तु नहिं नाम।
यह जानइ सो जानई, नाम तत्व अभिराम॥

श्रीराम-नाम ही तो सब कुछ है, भला राम-नाम क्या नहीं है? यह रहस्य जो जान लेता है, वही नाम-तत्व को समझेगा।

राम जपत जिय जड़ता जाई। अरु गुरुकृपा बीज पुनि पाई
चारि प्रकार गुप्त जप रीती। जानिसकलविधिजपइसप्रीती

श्रीराम-नाम जप से जीवों की जड़ता नष्ट हो जाती है। यदि गुरू की कृपा से राम-नाम का बीजमन्त्र मिल जाय तो चार प्रकार की गुप्त जप-विधियाँ सीखकर प्रेमपूर्वक जप में लगन लगानी चाहिये।

करिएकाग्र चित्तधरि ध्याना। लखइनाम रविकिरण महाना
दृगन द्वैरुखा दर्पण भ्राजै। हिय महँ सोई हीरा राजै

मन एकाग्र करके ध्यान करे—राम-नाम रूपी सूर्य की किरणों का महान् आनन्द देखे। आँखों में दोरुखा शीशा लगा है (इधर जगत् और उधर जगदीश्वर दीखता है) राम-नामरूपी हीरा हृदय में चमक रहा है।

जो जग महँ सत्यता विराजै। सो सब रामनाम सों भ्राजै
हृदयमध्य धुनि गुंजति सोई। घण्टा नाद सरिस जो होई

और जगत् में जो भी सत्यता है वह श्रीराम से ही है। हृदय में भी श्रीराम-नाम की ध्वनि गूंज रही है। जैसे घण्टा की ध्वनि होती है। ध्यान लगाकर सुनकर अनुभव करो।

जब लौं धुनि नहिं देय सुनाई। नाम रटन आवश्यक भाई
नामी कहँ प्रकटावै सोई। नामी नाम भेद नहिं कोई

परन्तु, जब तक ध्वनि न सुन पड़े तब तक राम-नाम की रट लगाना

आवश्यक है। राम-नाम ही नामी प्रभु श्रीराम को प्रकट करके दर्शन कराने वाला है, नामी में और नाम में तनिक भी भेद नहीं है।

दो०—बोले चेतनदास सुनि, पुनि पुनि शीश नवाय।
गुप्त रीति जप की सकल, दीजै नाथ बताय।।

श्रीचेतनदासजी इस रहस्य को सुन मनन करके प्रणाम करके बोले—हे नाथ ! जप की गुप्त रीतियाँ भी कृपा करके बता दीजिये।

बोले आचारज मृदु बाणी। जपविधि कहौं सुनहु चितआनी
मुख जपधुनि वैखरी सुहाई। हृदय मध्य मध्यमा कहाई

तब आचार्य प्रभु मधुर वाणी से बोले—अब जप-विधियाँ भी मन लगाकर सुन लो। मुख से जो जप किया जाता है, वह वैखरीध्वनि जप कहलाता है और हृदय से जो जप होता है उसे मध्यमा वाणी कहते हैं।

नाभी सों जप करहु सप्रीती। पश्यन्ती धुनि सुनि मन जीती
श्रवणलाय अजपा जप कीजै। सुखद परा वाणी सुनि लीजै

और नाभी से जो जप किया जाता है उसे पश्यन्ती ध्वनि वाला जप कहते हैं तथा कान लगाकर अनहद नाद वाला अन्तर में जो अजपा जप करते हैं वह परावाणी वाला है।

श्वाँसासों जप जे जन करहीं। बिनश्रम सिद्धिआय उरभरहीं
व्यापकनाम भरेउ चहुँओरा। ध्यानकरहु जिमि चंद्रचकोरा
नाम यत्न सों प्रकटत रामा। सोई यत्न सुनहु सुखधामा

और एक जप श्वाँस के साथ भी किया जाता है, श्वाँस के साथ ध्यान-पूर्वक जप करने से बिना परिश्रम के सिद्धियाँ प्राप्त होने लगती हैं। ऐसे ही एक और जप-विधि है कि राम-नाम ही सर्वत्र चारों ओर भरा हुआ व्यापक है, ऐसे तन्मयतापूर्वक ध्यान करे, जैसे चकोर चन्द्रमा को देखता है। नाम-जप के कुछ यत्नों से श्रीरामजी प्रकट हो जाते हैं, वह यत्न भी सुनो।

श्रीरामनाम ललाट महँ ध्यावहु अचल विधि ध्यान की
रा सों प्रकट प्रभु होंहिं म सों प्रकटहीं श्रीजानकी
यह दिव्य जप विधि जानि जे मन रामनामहिं पागहीं
जे जागहीं जग त्यागहीं दर्शन लहहिं जे लागहीं

अपने मस्तक में ध्यान करो, आँखें बन्द करके श्रीराम-नाम जैसे चमकते अक्षरों में लिखा है। एकाग्र मन से ध्यान करते-करते 'रा' अक्षर से रामजी और 'म' अक्षर से श्रीसीताजी प्रकट हो जाती हैं। यह भी दिव्य जप-विधियाँ हैं, इनको जानकर जो श्रीराम-नाम में ही मन की तन्मयता करते हैं वही सब वांछित फल पाते हैं। जो जगत् के स्वप्न से जगते हैं वही जगत् का मोह त्याग पाते हैं और जो लगन लगाकर नाम में लगते हैं वही प्रभु का दर्शन प्राप्त करते हैं।

दो०—सुनि आचारज के वचन, चेते चेतनदास।
भये प्रफुल्लित अति मनहुँ, पूजीं चातक आस।।
जैसे फिरि फिरि भीर महँ, पावै धक्का धूरि।
त्यों नर जनमत मरत बिन, राममंत्रमय मूरि।।

आचार्य प्रभु के उपदेश सुनकर चेतनदास पूर्ण चैतन्य हो गये। वे ऐसे प्रफुल्लित हो उठे मानो चातक को स्वाँति-बुन्द मिल गया हो। जैसे कोई प्राणी मेले की भीड़ में बार-बार धक्के और धूल पा रहा हो, वैसे ही मनुष्य बार-बार जन्म-मरण के चक्र में पड़ कर बिना राम-नाम के दुःख पा रहा है।

पलक उठत जग खेल सब, पलक उठत लय होय।
जासु सकल झलका झलक, श्रीरामानँद सोय।।
जीवन सों मरिवो भलो, बिन आचारज प्रेम।
भलो न अमृत सों गरल, भलो न हरि सो हेम।।

जिनकी पलक उठने से जगत् का खेल बन जाता है और पलक गिरने से लय हो जाता है, और सारे संसार में जिनकी ज्योति जगमगा रहो है वही प्रभु

श्रीरामानन्दाचार्यजी के रूप में प्रकट हुए। उस जीवन से तो मरना अच्छा है, जिस जीवन में गुरु-भक्ति न हो। और विषय (रूपी जहर पीने) से भक्तिरूपी अमृत पीना उत्तम है। धन-सम्पत्ति से भगवान् बड़े हैं, ऐसा जान धन से मोह करना ठीक नहीं।

अपनो गृह इत जरि रहेउ, जात बुझावन घूर।
आचारजयश सरिततजि, जलहित चढ़त खजूर॥
राममंत्र प्रद भक्ति प्रद, विरति शांतिप्रद चंद।
जय जय जगदानन्द प्रद, जगगुरु रामानन्द॥

लोग ऐसे मूर्ख हो रहे हैं कि अपने घर में आग लगने पर सड़े कूड़े के ढेर की आग को बुझाने जाते हैं। अर्थात् अपनी आयु बीती जा रही है, दुःखों में जल रहे हैं—परन्तु सभा-सोसाइटी, निन्दा-प्रपञ्च के कार्यों में समय गँवाते फिरते हैं। आचार्य भगवान् के चरित्ररूपी नदी छोड़ इधर-उधर भटकते हैं। जैसे कोई जल पीने के लिए खजूर के पेड़ पर चढ़ रहा हो। श्रीराम-मन्त्र को प्रदान करने वाले और श्रीराम-भक्ति प्रदान करने वाले, वैराग्य तथा शान्ति को देने वाले, चन्द्रमा के समान शीतलता देने वाले, जगत् को आनन्द देने वाले जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य की जय हो।

॥ इति उपदेश काण्ड समाप्त ॥